सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहूँ न कीजै बास।।
कोकिल बायस एकसम, पंडित मूरख एक।
इंद्रायन दाड़िम विषय जहाँ न नेकु बिबेक।।
बसिए ऐसे देस नहि, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय।।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 728 **A**

Unique Paper Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी गद्य के विकास के कारणों पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

संस्मरण के विकासक्रम का सामान्य परिचय दीजिए । (12)

2. 'गुंडा' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए ।

अथवा

'नमक का दारोगा' कहानी के शिल्प पर प्रकाश डालिए। (12)

3. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'वैष्णवता और भारतवर्ष' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (12)

4. नाटक के तत्वों के आधार पर 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

बिबिया में चित्रित स्त्री की समस्या पर प्रकाश डालिए। (12)

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) प्रेमचंदोत्तर कहानी

(ख) शुक्लयुगीन निबंध (7)

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए :- (10×2=20)

(क) "आप क्या देखते हैं? उतरिये डोंगी पर!" - उसके घावों से रक्त के फुहारे छूट रहे थे। उधर फाटक से तिलंगे भीतर आने लगे

थे। चेतसिंह ने खिडकी से उतरते हुए देखा कि बीसों तिलंगों की संगीनों में वह अविचलित होकर तलवार चला रहा है। नन्हकू के चट्टान-सदृश शरीर से गैरिक की तरह रक्त की धारा बह रही है। गुण्डे का एक-एक अंग कटकर वहीं गिरने लगा। वह काशी का गुंडा था!

अथवा

हिंदुस्तान के व्यापार घटने के जहाँ बहुत से कारण हैं उनमें कानून की बारीकियां भी एक है। कितने तरह के रोजगार और पेशे बदनाम हैं कि वे अच्छे शिष्ट पुरुष के करने योग्य समाज में नहीं समझे जाते। पर निश्चय मानो वह काम या पेशा खुद बुरा नहीं है किंतु जो लोग उसे कर रहे हैं वे ऐसे हैं जिससे वह काम या पेशा बदनाम हो गया है।

(ख) मद्यप और झगड़ालू पति के अत्याचार भी सम्भवत: उसके लिए इतने आवश्यक हो गए थे कि उनके अभाव में उसे इस लोक में रहना पसन्द न आया। माँ-बाप के न रहने पर बालिका की स्थिति कुछ अनिश्चित-सी हो गई। घर बड़ा भाई कन्हई, भौजाई और दादी थी। दादी बूढ़ी होने के कारण पोती की किसी भी त्रुटि को कभी अक्षम्य मानती थी, कभी नगण्य।

अथवा